अगस्त: 2021 वर्ष : 4 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

ICAR

Indian Council of Agricultural Research

National Award of Excellence for Agricultural Institutions

SARDAR PATEL OUTSTANDING
ICAR INSTITUTION AWARD 2020

(Large Institute)

is presented to

ICAR–Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore

16 July, 2021
New Delhi

(T. Mohapatra)
Secretary (DARE)
Director General (ICAR)

(Narendra Singh Tomar)
Union Minister of Agriculture & Farmers Welfare
Govt. of India

INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

भाकृअनुप ICAR

NATIONAL AWARD OF EXCELLENCE FOR AGRICULTURAL INSTITUTIONS

SARDAR PATEL OUTSTANDING ICAR INSTITUTION AWARD 2020
(For Large Institute Category)

ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore

CITATION

ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, has been awarded Sardar Patel Outstanding ICAR Institution Award 2020 in the category of Large Institute together with ICAR-Central Institute of Agricultural Engineer, Bhopal.

ICAR-CIFRI, Barrackpore has made outstanding contribution to the basic and strategic research on Inland open water fisheries in India. The reservoir fisheries development guidelines, developed by the institute, have been implemented in the reservoir resources of the country especially, in the states of Himachal Pradesh, Jharkhand, Chhattisgarh, Maharashtra, Odisha, Madhya Pradesh, Telangana, Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala, Tamil Nadu, Gujarat, Mizoram and Nagaland. Wetland fisheries management protocols recommended by this institute have significantly contributed to enhance fish yield which consequently improved livelihood security of the poor fishermen communities involved in wetland fisheries of India. The guidelines provided by ICAR-CIFRI to the Chilka Development Authority has not only improved the livelihood support base of fisher folks but also helped in sustainable fisheries from the lagoon. Cage culture technology emanated from the institute is operating in reservoirs of 22 states of India. ICAR-CIFRI's recommendations on e-flow for ecosystem sustainability of the rivers Dri, Tangon, Teesta, Nyamjang Chhu, Mahanadi, Cauvery, Sone and Ganga, have been accepted for policy formulation by the concerned agencies. Based on the Hilsa fisheries management guidelines of ICAR-CIFRI, Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying has formulated National Action Plan for Hilsa, and Govt. of West Bengal has devised Hilsa conservation policy and implemented through gazette notification. The institute has made significant contribution in ecotoxicological monitoring of river by gene expression patterns and identifying potential biomarkers in some fish species. The institute has disseminated inland catch assessment survey methodology and e-Atlas of waterbodies to Government through Department of Fisheries. It is the leading institute in India which has developed vulnerability assessment framework to mitigate climate change impact on inland fisheries. The institute has made continuous efforts in upgrading the knowledge of fishers, state government officials, students, researchers through training, FLDs, field visits, multidisciplinary interfaces.

अगस्त: 2021 वर्ष : 4 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

भाकृअनुप
ICAR

Indian Council of Agricultural Research

National Award for Excellence in Agricultural Research

RAFI AHMED KIDWAI AWARD
FOR OUTSTANDING RESEARCH IN
AGRICULTURAL SCIENCES
(Animal & Fisheries Sciences)

is presented to

Dr. Basanta Kumar Das

Director
ICAR–Central Inland Fisheries Research Institute
Barrackpore, Kolkata, West Bengal

16 July, 2021
New Delhi

(T. Mohapatra)
Secretary (DARE)
Director General (ICAR)

(Narendra Singh Tomar)
Union Minister of Agriculture & Farmers Welfare
Govt. of India

INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

NATIONAL AWARD FOR EXCELLENCE IN AGRICULTURAL RESEARCH

RAFI AHMED KIDWAI AWARD FOR OUSTANDING RESEARCH IN AGRICULTURAL SCIENCES 2020

(For Animal & Fisheries Sciences)

Dr. Basanta Kumar Das
Director, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute
Barrackpore, Kolkata

CITATION

Dr. Basanta Kumar Das, Director, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore, Kolkata, has been awarded Rafi Ahmed Kidwai Award for Outstanding Research in Agricultural Sciences 2020 in the category of Animal & Fisheries Sciences. He has been working on different aspects of Fish Health Management research, including diagnostics and therapeutics as well as novel immune-stimulants and its application in Aquaculture. He has developed three aquaculture medicines, three diagnostic kits, two novel antimicrobial compounds from algae and mango kernel for microbial diseases of freshwater fish. He has been continuously working for research, development, upscaling, and commercialization of important technologies of the institute among fish farmers and state fisheries departments of the country. He has contributed immensely in developing three technologies for enclosure culture and its commercialization. He has developed CIFACURE for controlling bacterial and fungal diseases in ornamental fish. He has published around one hundred and fifty research papers in high impact journals, twenty seven books, and sixty three book chapters. He is credited for designing Reservoir Database, Rohu, Labeo rohita database, Fish Disease App, and Nutrifish App. He has edited two Magazines, delivered many Television and Radio talks, and has attended 100 Disease outbreaks.

अगस्त: 2021 वर्ष : 4 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

“हर नागरिक की यह मुख्य ज़िम्मेदारी है कि वह महसूस करे कि उसका देश स्वतंत्र है और देश की स्वतंत्रता की रक्षा करना उसका कर्तव्य है” – लौह पुरुष, सरदार पटेल।

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का अगस्त 2021 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह अंक हमारे देश की 75वीं स्वाधीनता दिवस को समर्पित है। सर्वप्रथम मैं आप सभी को 75वें स्वाधीनता दिवस की बधाई देता हूँ। मासिक न्यूज़लेटर का यह अंक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और संस्थान, दोनों ही दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण और अनुपम है। देश के 75वें वर्ष में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद भारत की आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और इस दौरान परिषद ने विश्व प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिकों के वक्तृता सीरीज का आयोजन किया है। इसी क्रम में हमारे संस्थान में भी ऐसी पहल की जा रही है जिसका शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पूर्व महानिदेशक एवं मात्स्यिकी क्षेत्र के प्रख्यात मत्स्य वैज्ञानिक डा. एस अय्यप्पन की वक्तृता से की जायेगी।

साथ ही, मुझे यह बताते हुए अत्यंत ही प्रसन्नता हो रही है कि हमारे संस्थान को वृहत संस्थान श्रेणी के तहत सरदार पटेल उत्कृष्ट आईसीएआर संस्थान पुरस्कार-2020 से सम्मानित किया गया है। सरदार पटेल उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार के अलावा डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, सिफ़री को पशु और मत्स्य विज्ञान श्रेणी के तहत कृषि विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए रफी अहमद किदवई पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। संस्थान पत्रिका "नीलांजलि" को ‘ग’ क्षेत्रों की श्रेणी में ‘गणेश शंकर विद्यार्थी प्रोत्साहन पुरस्कार’ मिला है। ये सभी पुरस्कार दिनांक 16 जुलाई 2021 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 93वें स्थापना दिवस और पुरस्कार समारोह के अवसर पर माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, श्री नरेंद्र सिंह तोमर द्वारा प्रदान किया गया। मैं इन सभी पुरस्कारों के लिए संस्थान के समस्त कर्मियों को धन्यवाद देता हूँ और यह आशा करता हूँ कि आगे भी उनका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहे जिससे हमारा संस्थान सफलता के नए आयाम और ऊंचाईयों को प्राप्त करे।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

(बसन्त कुमार दास)

डा. टी. जे. जॉब, पूर्व निदेशक, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान केंद्र, बैरकपुर, कोलकाता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीनस्थ केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान केंद्र, बैरकपुर, कोलकाता के निदेशक के तौर पर डॉ टी. जे. जॉब (डॉ थितापिल्ली जोसेफ जॉब) का कार्यकाल संस्थान में 21 जून 1947 से 30 नवंबर 1951 तक रहा। डा. जॉब का जन्म 1909 में हुआ था। उन्होने मद्रास विश्वविद्यालय से अपनी डीएससी डिग्री वर्ष 1941 में प्राणिविज्ञान में प्राप्त की। केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान केंद्र, बैरकपुर में उन्होंने मुख्य अनुसंधान अधिकारी के तौर पर अपने सेवाकाल का शुभारंभ किया। इसके बाद वे विभिन्न पदों पर आसीन हुये : एशिया और सुदूर पूर्व के लिए सहायक क्षेत्रीय मत्स्य अधिकारी, एफएओ, संयुक्त राष्ट्र (1951-56); मत्स्य जीवविज्ञानी (1956-59) और क्षेत्रीय मत्स्य सलाहकार (1959-70); काहिरा, एफएओ, संयुक्त राष्ट्र; और मत्स्य विकास सलाहकार, केरल सरकार (1972-73)।

यदि डॉ. जॉब की शैक्षणिक और अनुसंधान उपलब्धियों को देखा जाय तो उनकी उपलब्धियां समुद्र विज्ञान, मछली पालन और मत्स्य पालन प्रौद्योगिकी में विशेष तौर पर थीं। उन्होने जल में होने वाली रोगों के नियंत्रण में लार्विसाइडल और साइक्लोप्सिडल मछलियों की क्षमता का आकलन किया। इसके अलावा, डा. जॉब ने 'सार्वजनिक स्वास्थ्य हेतु मछली पालन' की एक अनूठी और मूल्यवान योजना पर कार्य किया। मछली पालन, जलक्षेत्र में खाद का प्रयोग और तालाब में जलजीव पालन से जलीय और अर्ध-जलीय सब्जियों की कृषि में बहुत सहायता मिली जिससे खाद्य उत्पादन के लिए सभी कृषि योग्य जल के उपयोग संभव हो पाया ।

पुरस्कार और सम्मान: डॉ जॉब को इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, बैंगलोर, जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया और एकेडमी ऑफ जूलॉजिस्ट ऑफ इंडिया के फेलोशिप से सम्मानित किया गया था। डॉ जॉब का निधन दिनांक 26 फरवरी 1979 को हुआ।

राज्य सरकार के मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में मछली पकड़ने के डेटा के संग्रह पर दृष्टांत मूलक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

मछली पकड़ने के डेटा का संग्रह और मछली पकड़ने के आकलन के लिए एक उपयुक्त रणनीति का चयन करना और लागू करना राज्य के मत्स्य पालन विभागों के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय रहा है क्योंकि यह जटिल और विविध है। मछली पकड़ने के आकलन के ऐसे मुद्दों को हल करने के लिए, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 6 जुलाई 2021 को "अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में मछली पकड़ने के डेटा के संग्रह पर दृष्टांत मूलक तकनीक" पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण का उद्देश्य, मुख्य रूप से नमूना तकनीकों और उसके अनुप्रयोगों की अवधारणाओं की खोज कर और डेटा संग्रह से परिचित होकर अन्तर्स्थलीय खुले जल से पकड़ी गई मछलियों के डेटा का पीएमएमएसवाई कार्यक्रम के माध्यम से अनुमान लगाने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करना हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 125

प्रतिभागियों ने अलग अलग राज्य के मत्स्य विभागों से भाग लिया और समृद्ध हुए। हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, असम, त्रिपुरा, नागालैंड, मिजोरम, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, पंजाब, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों से मत्स्य विभागों के अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। ऑनलाइन प्रशिक्षण सत्र में बिहार के 50 अधिकारी, सिक्किम के 20 अधिकारी, त्रिपुरा के 12 अधिकार्यों ने भाग लिया। संस्थान के माननीय निदेशक डॉ. बि. के. दास, महोदय ने इस कार्यक्रम के निदेशक भी रहे और उन्होनें अपने स्वागत भाषण में इस तरह के प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया और यह भी बताया कि इस उन्नत प्रशिक्षण के माध्यम से मत्स्य क्षेत्र को कैसे लाभ पहुंचे गा। उन्होंने मछली पकड़ने के डेटा के संग्रह के लिए एक ऑनलाइन ऐप विकसित करने के बारे में भी उल्लेख किया। डॉ. बि. के. दास ने "अन्तर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन और मछली पकड़ने के पैटर्न का अवलोकन" पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने लागत और लाभ के विश्लेषण और जर्मप्लाज्म की कमी को रोकने के महत्व पर जोर दिया। इसके बाद संस्थान की वैज्ञानिक श्रीमती चायना जाना, द्वारा "तालाबों और टैंकों से मछली पकड़ने के डेटा का अनुमान" पर एक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने विभिन्न तकनीकों और कैच मूल्यांकन सर्वेक्षण की विधि के बारे में बताया। डॉ. मलय नस्कर, संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, ने "नदी, मुहाना, आर्द्रभूमि और जलाशयों में मछली पकड़ने के डेटा का अनुमान" पर एक व्याख्यान का प्रदर्शन किया। उन्होंने डेटा संग्रह, स्तरीकरण रणनीतियों और कैच अनुमान की सरलीकृत तकनीकों की कमियों के बारे में चर्चा की।

व्याख्यान के बाद बातचीत और चर्चा हुई, जिसके दौरान राज्य के मत्स्य अधिकारियों ने अपनी शंकाओं को दूर किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एक बड़ी सफलता रही और यह निर्णय लिया गया कि इसी तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम और भी संचालित किए जायेंगे

ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड के साथ "आईसीएआर-सिफ़री आर्गक्युर" के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण लाइसेंस समझौते पर हस्ताक्षर किया गया

सिफ़री आर्गक्युर प्रौद्योगिकी हस्तांतरण लाइसेंस समझौते पर डॉ. बि.के.दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता और श्री सरीफुल इस्लाम, प्रबंध निदेशक, ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता द्वारा 7 जुलाई 2021 को डॉ.जे.के.जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर और डॉ.सुधा मैसूर, सीईओ, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली की ऑनलाइन उपस्थिति में हस्ताक्षर किया गया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण दिशानिर्देशों के अनुसार, सिफ़री आर्गक्युर प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण को एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (भारत सरकार का एक उद्यम) और विनिर्माण और बिक्री को सुगम बनाने के लिए ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता को 5 साल के लिए प्रौद्योगिकी लाइसेंस हस्तांतरित किया जा रहा है। डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने सभी मेहमानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और अर्गुलस परजीवी के नियंत्रण में इस्तेमाल की जाने वाली क्रांतिकारी तकनीक "सिफ़री आर्गक्युर" के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह उत्पाद 5 साल के कठोर शोधकार्य और 2 साल के फील्ड परीक्षण के बाद तैयार किया गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तीन सफल व्यावसायिक तकनीकों सिफ़री जीआई केज (CIFRI GI CAGE), सिफ़री एचडीपीई पेन (CIFRI PEN HDPE) और सिफ़री केज ग्रो (CIFRI Cage Grow) फिश फीड के बाद भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, द्वारा सिफ़री आर्गक्युर (CIFRI Argcure) का व्यावसायीकरण किया जा रहा है।

डॉ.जे.के.जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में टिप्पणी की कि मछली के जीवाणु और वायरल रोग के नियंत्रण के लिए कई उत्पाद उपलब्ध हैं क्योंकि इन रोगजनकों पर तत्काल ध्यान दिया जाना जरूरी है। लोग परजीवी रोग पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं क्योंकि वे घातक नहीं होते हैं। हमारे शोध अध्ययन से पता चलता है कि परजीवी रोग के हमले के कारण रु. 30000-75000/हेक्टेयर का नुकसान होता है, जो काफी महत्वपूर्ण है। सिफ़री आर्गक्युर (CIFRI ARGCURE) निश्चित रूप से अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि में इस परजीवी प्रकोप से राहत प्रदान करेगा। उन्होंने फॉर्मूलेशन की स्थिति को ध्यान में रखते

हुए सुरक्षा मुद्दों पर भी जोर दिया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर उन्होनें संस्थान के टीम के सदस्यों और श्री सरीफुल इस्लाम, एमडी, ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड को बधाई दी।

डॉ. सुधा मैसूर, सीईओ, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड ने अपने संबोधन में कहा कि महामारी की स्थिति के कारण हम हस्ताक्षर समारोह में शारीरिक रूप से शामिल नहीं हो सके, जिसका उन्हें खेद हैं। उन्होनें इस प्रयास के लिए सिफ़री के टीम को बधाई दिया और इस तकनीक की बड़ी सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ दी।

डॉ. बी. पी. मोहंती, सहायक महा निदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), भाकृअनुप ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि अर्गुलस एक बड़ी समस्या है। यह तकनीक नैनो फॉर्मूलेशन के माध्यम से विकसित हुई है और अर्गुलस नियंत्रण में बहुत प्रभावी हैं । उन्होनें उम्मीद की कि मत्स्य पालन क्षेत्र में इस उत्पाद की मांग काफी ज्यादा होगी। श्री सरीफुल इस्लाम, प्रबंध निदेशक, ग्लौकस एग्रोकेम प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता ने यह अवसर प्रदान करने के लिए भाकृअनुप- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर को धन्यवाद दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संस्थान के साथ यह साझेदारी भविष्य में भी प्रयासरत रहेगी और जारी रहेगी। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव श्री गणेश चंद्र, प्रभारी, संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई, भाकृअनुप- केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सिफरी आर्गक्युर

जलीय कृषि और मत्स्य पालन में परजीवी समस्या का प्रबंधन करने के लिए, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने सिंथेटिक और प्राकृतिक पॉलिमर का उपयोग करते हुए नैनोमिसेलाल पद्धति से सिफ़री आर्गक्युर (CIFRI-ARGCURE®) नामक एक अभिनव तकनीकी विकसित किया है। प्रायोगिक परिणामों से पता चलता है कि सिफ़री आर्गक्युर (CIFRI-ARGCURE®) पारंपरिक फॉर्मूलेशन की तुलना में कम परिमाण का इस्तेमाल कर मछली परजीवी अर्गुलस बेंगालेंसिस (Argulus bengalensis) को नियंत्रित करने में प्रभावी है। यह भी पाया गया कि सिफ़री आर्गक्युर (CIFRI-ARGCURE®) के प्रयोग से परजीवी की हैचिंग प्रक्रिया बाधित होती है। फील्ड के मूल्यांकन से पता चला है कि सिफ़री आर्गक्युर (CIFRI-ARGCURE®) ने वहाँ की स्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन किया है और जल निकायों को लंबे समय तक परजीवी मुक्त रखा हैं। वर्तमान नैनो-तकनीकी हस्तक्षेपों के माध्यम से मछली परजीवियों के खिलाफ एंटीपैरासिटिक अणुओं का बेहतर प्रदर्शन रहा और अनुप्रयोग खुराक को कम करके खाद्य और पर्यावरण सुरक्षा में सुधार लाया जा सकता है।

राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस, 2021 पर भारत का अमृत महोत्सव मनाने के लिए शुरू किया गया "स्थायी मत्स्य पालन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन प्रक्रिया " पर राष्ट्रीय अभियान

भारतीय स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ (भारत की आजादी की अमृत महोत्सव) के स्मारक अवसरपर, भाकृअनुप मात्स्यिकी विभाग द्वारा पूरे भारत में स्थायी मत्स्य पालन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन पर राष्ट्रीय अभियान की शुरुवात की गई। इस राष्ट्रीय अभियान में सभी आठ मात्स्यिकी संस्थान जैसे सीआईएफआरआई, सीएमएफआरआई, एनबीएफजीआर, डीसीएफआर, सीआईएफई, सीआईएफए, सीआईबीए और सीआईएफटी शामिल हुए। भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के नेतृत्व में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 10 जुलाई 2021 के शुभ दिन पर यह अभियान शुरू किया गया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पारिस्थितिकी तंत्र आधारित स्थायी मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए कार्यक्रमों और अभियानों की एक श्रृंखला का आयोजन किया।

अन्तर्स्थलीय खुले जल मात्स्यिकी प्रबंधन वेबिनार के उद्घाटन पर डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रेरित प्रजनन के जनक प्रो. हीरा लाल चौधरी को पुष्पांजलि

अर्पित कर की गई। मछली के प्रेरित प्रजनन की पहली सफलता 10 जुलाई 1957 को प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. हीरा लाल चौधरी और डॉ. अलीखुनी द्वारा प्राप्त की गई थी। प्रेरित प्रजनन की पहली सफलता को मनाने के लिए, भारत सरकार ने 10 जुलाई को राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है।

डॉ. बि.के.दास, निदेशक, भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि और सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने राष्ट्रीय अभियान के बारे में जानकारी दी और बताया कि यह किसानों, मछुआरों और महिलाओं, छात्रों, बीज उत्पादकों, इनपुट डीलरों, किसान उत्पादक संगठनों, किसान उत्पादक कंपनियों, स्वयं सहायता समूहों, सहकारी समितियों, किसान समूहों और उद्यमियों आदि को सशक्त बनाने में मदद करेगा।

डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक, भाकृअनुप (मात्स्यिकी विज्ञान), और इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस प्रेरित प्रजनन तकनीक के आविष्कार का प्रतीक है जिसने देश में जलीय कृषि उत्पादन में क्रांति ला दी। वर्षों से शोधकर्ताओं ने किसानों द्वारा किए गए प्रजनन तकनीक और शोधन के ज्ञान को जोड़ा है। उन्होंने पिछले पांच दशकों में विभिन्न मछली नस्लों के विकास और देश में उत्पादन बढ़ाने में वैज्ञानिक समुदाय द्वारा किए गए योगदान पर भी ध्यान दिया। मछली उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है और अब बाजार को उत्पादन

से जोड़ने का समय आ गया है। नई चुनौती उत्पादन को बढ़ाकर 25 मिलियन टन तक करना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि आजकल लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हैं, इसलिए उत्पाद की गुणवत्ता भी बनी रहनी चाहिए। विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता और पूर्व एडीजी, वर्ल्ड फिश डॉ. एम.वी. गुप्ता ने सम्मानित अतिथि के रूप में अपने संबोधन में कहा कि 1980 के दशक तक 90% मछली बीज नदियों से एकत्र किए जाते थे, इस प्रेरित प्रजनन तकनीक ने हैचरी के माध्यम से वर्तमान में बीज उत्पादन को बढ़ाया है। मछली के अधिकांश बीजों का उत्पादन हैचरी में किया जाता है। मत्स्य पालन क्षेत्र ने राष्ट्र को खाद्य और पोषण सुरक्षा प्रदान की है।

डॉ. दिलीप कुमार, पूर्व निदेशक और कुलपति, भाकृअनुप-सीआईएफई ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि इस एक शोध परिणाम प्रेरित प्रजनन के परिणामस्वरूप करोड़ों मछुआरें अपने उत्पादन और आजीविका को बढ़ाकर लाभान्वित हुए हैं ।

डॉ. वी. वी. सुगुनन, पूर्व एडीजी, भाकृअनुप (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), ने कहा कि मछली बीज उत्पादन में वृद्धि के कारण, भारत ने अन्तर्स्थलीय मछली उत्पादन में काफी वृद्धि की है। कल्चर आधारित मत्स्य प्रबंधन के कारण देश में जलाशय और आर्द्रभूमि मछली उत्पादन में वृद्धि होने जा रही है।

डॉ. एन. सारंगी, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप-सीफा, डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भाकृअनुप-सीएमएफआरआई, डॉ. सीएन रविशंकर, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफटी, डॉ. पदमा कुमार,

आरएसी अध्यक्ष, आईसीएआर-सीआईएफआरआई और अन्य अतिथियों ने भी इस अवसर पर अपने वक्तव्य रखें। डॉ. ए. के. दास ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस कार्यक्रम में 5000 से अधिक मछुआरों, छात्रों, उद्यमियों ने भाग लिया।

इस राष्ट्रीय अभियान के तहत बड़ी संख्या में कार्यक्रम और गतिविधियों का आयोजन किया गया। भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, गुवाहाटी केंद्र और आईसीएआर-आटारी ने 'एनईआर के मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए पारिस्थितिकी तंत्र आधारित मत्स्य प्रबंधन' पर वेबिनार का आयोजन किया जहां 300 से अधिक लोगों ने भाग लिया। क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने एएफडीसी के सहयोग से असमिया भाषा में 'प्रबंधन प्रक्रिया के लिए असम के बील इको-सिस्टम का प्रबंधन' पर वेबिनार का आयोजन किया। मनचनाबेले जलाशय, रामनगर जिला, कर्नाटक में सतत विकास के लिए जलाशय मत्स्य प्रबंधन पर एक ऑनलाइन जागरूकता कार्यशाला 10 जुलाई 2021 को सुबह 9 से 11 बजे तक आयोजित की गई थी। कर्नाटक के विभिन्न जिलों के मत्स्य अधिकारियों के साथ लगभग 200 मछली किसानों ने ऑनलाइन मोड के माध्यम से कार्यक्रम में भाग लिया।

पश्चिम बंगाल, गुजरात, कर्नाटक, केरल और उत्तर प्रदेश राज्यों में भी बड़ी संख्या में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। जलाशयों में आजीविका संवर्धन के लिए सतत मत्स्य पालन पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन केरल के त्रिशूर जिले के वज़ानी जलाशय में संस्थान के कोच्चि क्षेत्रीय केंद्र द्वारा किया गया। संस्थान के वडोदरा केंद्र द्वारा माही नदी में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 100 मछुआरों ने भाग लिया। दाशपारा घाट, बैरकपुर और संगम, प्रयागराज में गंगा नदी में रैन्चिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जहां गंगा नदी में 40,000 और 5000 अंगुलिमीनों को प्रवाहित किया गया। इसके साथ ही मछली के व्यवहार और विकास को देखने के लिए 500 मछलियों को टैग किया गया और छोड़ा गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी में "उत्तर पूर्वी क्षेत्र के मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित प्रबंधन" पर ऑनलाइन संवादात्मक कार्यक्रम आयोजित

भाकृअनुप –केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने भाकृअनुप -कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान (अटारी), जोन-VI, गुवाहाटी के सहयोग से "उत्तर पूर्वी क्षेत्र के मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन" पर एक ऑनलाइन संवादात्मक कार्यक्रम का आयोजन 10.07.21 को 'भारत का अमृत महोत्सव' और 'राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2021' के अवसर पर किया। असम, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के 90 कृषि विज्ञान केंद्रों (KVK) का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 467 मछली किसानों और वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. बागीश कुमार, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-अटारी, गुवाहाटी ने प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। मुख्य व्याख्यान देते हुए, डॉ. ए. के. त्रिपाठी, निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, गुवाहाटी ने मछली किसानों द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र में मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर दिया। इनमें मत्स्य अनुसंधान संस्थानों/विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित पैकेज-ऑफ-प्रैक्टिस का पालन करना और तालाब में अनावश्यक रसायनों से बचना शामिल है। भाकृअनुप –केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रभारी डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, ने मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए पारिस्थितिक तंत्र-आधारित प्रबंधन के वैज्ञानिक आधार को समझाते हुए उनकी दीर्घकालिक स्थिरता के बारे में बताया। उन्होंने क्षेत्र के बहुमूल्य स्वदेशी मछली संसाधनों के संरक्षण के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के मत्स्य संसाधनों जैसे बील, जलाशयों, नदियों आदि की प्राचीन पारिस्थितिक स्थितियों को बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. एस. येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया। वैज्ञानिक (डॉ. डी. देबनाथ, श्री ए. के. यादव, डॉ. पी. दास, डॉ. एस.सी.एस. दास, श्रीमती नीति शर्मा, डॉ. एन.एस. सिंह), तकनीकी कर्मचारी (श्री बी.सी. रे, श्री ए. काकाती) और शोधार्थियों (श्री पिकलू देबनाथ, ए. के. बोरगोहेन, डी. बोरदोलोई, कौशिक दास, के. बोरा) ने संवादात्मक सत्र में भाग लिया।

'भारत का अमृत महोत्सव' और 'राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2021' के अवसर पर 10 जुलाई, 2021 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी में ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

भारत का अमृत महोत्सव' और 'राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2021' के अवसर पर, भाकृअनुप–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने असम मत्स्य विकास निगम (AFDC) लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से 10.07.21 को "असम के बील मछुआरों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन" पर एक ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। असम के 20 जिलों में फैले 558 से अधिक बील पट्टेदारों, मछुआरों और मछुआरों को-ऑपरेटिव सोसाइटी के सदस्यों ने 105 बील का प्रतिनिधित्व किया और एएफडीसी के फील्ड अधिकारियों ने ऑनलाइन कार्यक्रम में भाग लिया। संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. देबनाथ ने प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया।

डॉ. बि .के. दास, निदेशक, भाकृअनुप –केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर भी ऑनलाइन में जुड़े और उन्होनें राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के महत्व और अपने गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के माध्यम से असम के बील मत्स्य पालन के विकास के लिए अनुसंधान एवं विकास सहायता प्रदान करने के लिए संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में बताया। श्री पी. के. हजारिका, परियोजना निदेशक और ओएसडी, एएफडीसी लिमिटेड ने असम के माननीय मुख्यमंत्री के नेतृत्व में इन बील से मछली उत्पादन और मछुआरों की आय में वृद्धि करते हुए निगम द्वारा अपने नियंत्रण में बील के पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए उठाए गए कदमों की सराहना की। असम के मत्स्य मंत्री, एएफडीसी लिमिटेड के अध्यक्ष और असम के अतिरिक्त मुख्य सचिव, (श्री रबी शंकर प्रसाद, आईएएस) से प्राप्त सहायता के बारे में भी बताया। उन्होंने संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास; डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के साथ-साथ केंद्र के सभी वैज्ञानिक/तकनीकी और अन्य स्टाफ सदस्य को धन्यवाद दिया। डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने कहा कि असम के बील से औसत मछली उत्पादन 1996-98 में 173 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष से

बढ़कर हाल के वर्षों में 254 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष हो गया है और यह बील की पर्यावरणीय स्थिति के सुधार करने से संभव हुआ हैं जिसमें मैक्रोफाइद्व का नियंत्रण, नदी के कनेक्शन को पुनर्जीवित करना आदि शामिल हैं। संस्थान के तकनीकी समर्थन से कार्प अंगुलिमीनों के पूरक स्टॉकिंग का अभ्यास करने वाली बील में औसत मछली उत्पादन दर बढ़कर 454 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष हो गई है। संस्थान ने हाल ही में डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भाकृअनुप,नई दिल्ली और संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास, के नेतृत्व में 9 जिलों में स्थित असम के 19 बील में पूरक स्टॉकिंग और 5 बील के पेन में पूरक स्टॉकिंग कार्यक्रम शुरू किया है। श्री ज्योतिष सैकिया, कार्यपालक अभियंता; श्री डी. एस. पामे, सहायक, प्रोजेक्ट निदेशक; श्री द्विपेन ब्रह्मा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक, और आई/सी-लोअर असम डिवीजन और सुश्री प्रियंका भराली, कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक ने कार्यक्रम में एएफडीसी लिमिटेड का प्रतिनिधित्व किया। डॉ. एस. येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक; श्री ए. के. यादव, डॉ. पी. दास, डॉ. एस. सी. एस. दास, सुश्री नीति शर्मा, डॉ. एन. एस. सिंह, वैज्ञानिक; श्री बी.सी. रे, एसटीओ: ए. काकाती, एसटीए और शोधार्थीयों ने संवादात्मक कार्यक्रम में भाग लिया।

राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के अवसर पर संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा गंगा नदी में मछलियों को छोड़ा गया

भाकृअनुप - केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने 10 जुलाई 2021 को गंगा नदी के तट पर तीन स्थानों पर (प्रयागराज के संगम स्थल, राम घाट और दशाश्वमेध घाट) राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाया। संगम स्थल, प्रयागराज में मुख्य समारोह सह जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्रयागराज की मेयर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने एकत्रित श्रोताओं को संबोधित किया और मानव जाति के लिए गंगा और मछलियों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने लोगों से गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त रखने का आग्रह किया जो अंततः नदी की जैव विविधता को बनाए रखने में मदद करती है। इन मछलियों को पुनर्स्थापित और संरक्षित करने के लिए विशेष रूप से पाले गए भारतीय मेजर कार्प (आईएमसी) की 3000 (तीन हजार) मछलियों को गंगा नदी में प्रवाहित किया गया। केंद्र के प्रभारी डॉ. डी.एन.झा ने अतिथि का स्वागत किया और उपस्थित दर्शकों को विस्तार से मछली पालन के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने दर्शकों को गंगा नदी की महत्वपूर्ण मछलियों और जैव विविधता के संरक्षण और पुनर्स्थापना के लिए संस्थान द्वारा किए गए कार्यों के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि गंगा विचार मंच एवं नमामि गंगे के प्रतिनिधि श्री राजेश शर्मा, संयोजक, ने भी संबोधित किया। उन्होंने लोगों को गंगा को स्वच्छ रखने के लिए उठाए गए विभिन्न कदमों की जानकारी दी और इस उद्देश्य को सफल करने के लिए आम जनता की भूमिका पर जोर दिया। इस अवसर पर गंगा विचार मंच, डब्ल्यूआईआई, मत्स्य विभाग, गंगा प्रहरी, गंगा टास्क फोर्स के अधिकारी, आसपास के गांवों के मछुआरे, मछली व्यापारी और गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में वैज्ञानिक डॉ . वेंकटेश ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. मोनिका गुप्ता, श्री जीतेन्द्र कुमार, डॉ. संदीप कुमार मिश्रा, श्री श्री शिवजन्म वर्मा, श्री संदीप मिश्रा और संस्थान के प्रयागराज केंद्र के अन्य कर्मचारियों ने मिलकर किया।

सुंदरबन में याश प्रभावित क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति महिला मछुआरों के लिए सजावटी मत्स्य पालन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने कुलतोली के याश (सुपर साइक्लोन) प्रभावित महिला मछुआरों के लिए सजावटी मछली पालन पर पांच दिनों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया है। कुलतोली दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल के बसंती ब्लॉक (सुंदरबन क्षेत्र) के अंतर्गत एक गांव है और इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की आबादी का प्रभुत्व है और ज्यादातर लोग चावल-मछली उत्पादन पर आर्थिक तौर पर और आजीविका के रूप में निर्भरशील है। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में कुलतोली क्षेत्र में एक सजावटी मछली गांव विकसित करने की योजना बनाई गई थी, क्योंकि वहाँ की महिला मछुआरों ने सजावटी मत्स्य पालन के लिए अपनी रुचि दिखाई थी। प्रारंभिक चरण में लाभार्थियों को 50 सजावटी टैंक, मछली बीज, मछली चारा और अन्य सामान वितरित किए गए। संस्थान द्वारा लाभार्थियों को सभी सहायता प्रदान की गई। दूसरे चरण में इस क्लस्टर से 50 महिला लाभार्थियों को सजावटी मछली पालन पर प्रशिक्षित किया गया ताकि 200 और महिला लाभार्थियों को इससे लाभ मिल सके । प्रतिभागियों को सजावटी मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया, जैसे - देशी और विदेशी सजावटी मछलियों की पहचान, सजावटी मछलियों को संभालना, जीवित वाहक और अंडे की परतों की देखभाल, नर मादा अलगाव और प्रजनन, फ़ीड की आवश्यकता, लाइव फीड संग्रह और कल्चर, फ़ीड तैयार करना, एहतियाती उपाय, सजावटी मछली रखने में सामान्य रोग और उनकी दवाएं और मछलीघर और सहायक उपकरण आदि का निर्माण शामिल हैं। निदेशक महोदय ने प्रत्येक महिला मछुआरे को सजावटी मछली पालन के विषय पर एक पुस्तिका प्रदान किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान सजावटी मछली गांव का भी उद्घाटन किया गया। यह कार्यक्रम क्षेत्र में स्थित एक गैर सरकारी संगठन 'मिलन तीर्थ सोसाइटी' के सहयोग से आयोजित किया गया था।

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर को आईसीएआर के 93वें स्थापना दिवस के अवसर पर बृहद संस्थान की श्रेणी में सरदार पटेल उत्कृष्ट आईसीएआर संस्थान पुरस्कार-2020 और अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर कोलकाता को बृहद संस्थान की श्रेणी में **सरदार पटेल उत्कृष्ट आईसीएआर संस्थान पुरस्कार-2020** से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 16 जुलाई 2021 को 93वें आईसीएआर स्थापना दिवस और पुरस्कार समारोह के अवसर पर माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर द्वारा प्रदान किया गया। संस्थान को 5 लाख रुपए नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया ।

सरदार पटेल उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार के अलावा, संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास, को पशु और मत्स्य विज्ञान श्रेणी के तहत कृषि

विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए रफी अहमद किदवई पुरस्कार से सम्मानित किया गया। निदेशक महोदय को पुरस्कार स्वरूप 2.5 लाख रुपये का नकद इनाम और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

संस्थान के हिन्दी गृहपत्रिका "नीलांजलि" को 'ग' वर्ग की श्रेणी में गणेश शंकर विद्यार्थी प्रोत्साहन पुरस्कार भी मिला।

संस्थान ने अन्तर्स्थलीय खुले जल पारिस्थितिकी, जलीय जैव विविधता, मत्स्य पालन, पोषण और आजीविका प्रतिभूतियों की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए ज्ञान आधार बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति हासिल की है। संस्थान अन्तर्स्थलीय खुले जल क्षेत्र में अपना काम कर रहा है जिसमें नदियों और नहरों (195210 किमी), बाढ़ के मैदानी आर्द्रभूमि (5 लाख हेक्टेयर), जलाशय (3.51 मिलियन हेक्टेयर), मुहाना (0.029 मीटर हेक्टेयर) आदि शामिल हैं और भारत के मछली उत्पादन में 15% और अन्तर्स्थलीय मछली का 20% शामिल हैं। संस्थान सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) # 1, 2, 5, 8, 13, 14 को मानवता और राष्ट्रीय विकास की दिशा में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से संबोधित कर रहा है।

संस्थान प्रौद्योगिकी को सफलतापूर्वक अपनाने से जलाशयों का उत्पादन छोटे, मध्यम और बड़े जलाशयों से क्रमशः 100000, 20000 और 15000 मीट्रिक टन तक बढ़ गया है, जो कुल मिलाकर 1.35 लाख मेट्रिक टन है। अनुसंधान, प्रदर्शन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण ने भारत के 22 राज्यों में केज कल्चर तकनीक को अपनाने में सक्षम बनाया जिसने निजी उद्यमियों को भी आकर्षित किया है। केज कल्चर से उच्च मत्स्य उत्पादन 3000/किग्रा/केज प्राप्त किया गया।

संस्थान के अनुसंधान ने मछुआरों को रोजगार के उच्च अवसर और आय सृजन की दिशा में नये आयाम प्रदान किए है। जलाशयों और आर्द्रभूमि में कल्चर आधारित मत्स्य पालन को अपनाने के माध्यम से मछुआरों का रोजगार 30 कार्यदिवस से बढ़कर 150 कार्य दिवस / मछुआरे परिवार / वर्ष हो गया है। पेन कल्चर के माध्यम से 90 कार्य दिवस/पेन के कारण अतिरिक्त रोजगार सृजित किया गया है। असम में पेन कल्चर ने बाढ़ के मैदान की आर्द्रभूमि में 50% मछली उत्पादन में वृद्धि की है, जिससे कृषक समुदाय की आय और आजीविका में वृद्धि हुई है।

संस्थान ने केंद्रीय क्षेत्र योजना (सीएसएस) के तहत 19 राज्यों के 0.5 हेक्टेयर से अधिक जल निकायों के ई-एटलस विकसित किए हैं। ये ई-एटलस जल निकायों में मत्स्य पालन के प्रबंधन के लिए राज्यों के नीति नियोजकों को प्रदान किए गए हैं। संस्थान ने पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखंड, बिहार, असम, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मिजोरम, सिक्किम, तेलंगाना और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह जैसे 14 राज्य विभागों के साथ परामर्शी योजना के माध्यम से अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य विकास के लिए रोडमैप तैयार और प्रकाशित किया जो दूसरी नीली क्रांति लाने के लिए सहायक सिद्ध होगा । 2015-2020 के दौरान, संस्थान ने बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, केरल, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और त्रिपुरा के 5215 मछली किसानों, अधिकारियों और छात्रों (4410 पुरुष और 805 महिला प्रतिभागियों) को प्रशिक्षण प्रदान करते हुए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन और विकास के विभिन्न पहलुओं पर 165 व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान, संस्थान ने नदियों, मुहल्लों, नहरों और खाड़ियों के मछुआरों और जलाशयों और आर्द्रभूमि के मछुआरों/मछुआरों सहकारी समितियों के लिए अंग्रेजी, हिंदी और 7 क्षेत्रीय भाषाओं में परामर्शी योजना विकसित किया। संयुक्त राष्ट्र के रोम के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा इन सलाहों की अत्यधिक सराहना की गई और एशियाई क्षेत्र के लिए इन सिफारिशों को मान्यता प्रदान की गई।

पुरस्कार: गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार योजना

पुरस्कृत पत्रिका	वर्ग	पुरस्कृत संस्थान	स्थान
मत्स्यगंधा	'ग' क्षेत्र के संस्थानों के लिए	केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन	प्रथम
रेशा किरण	'ग' क्षेत्र के संस्थानों के लिए	केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, कोलकाता	द्वितीय
सोयवृत्तिका	'क' एवं 'ख' क्षेत्र के संस्थान	भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर	प्रोत्साहन
लाक्षा	'क' एवं 'ख' क्षेत्र के संस्थान	भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची	प्रोत्साहन
सब्जी किरण	'क' एवं 'ख' क्षेत्र के संस्थान	भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी	प्रोत्साहन
नीलांजलि	'ग' क्षेत्र के संस्थान	केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता	प्रोत्साहन

अनुसूचित जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम के तहत बेलेडंगा आर्द्रभूमि में किसी भी जलवायु में सक्षम और ऑटो ब्रीडर मछली, *सिस्टोमस सराना* की कैप्टिव नर्सरी की स्थापना

छोटे कार्प और किसी भी तरह की जलवायु में सक्षम मछली के उत्पादन को बढ़ाने के लिए, डॉ. बि. के. दास, निदेशक के नेतृत्व में संस्थान ने अनुसूचित जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम के तहत अपनाई गई सभी आर्द्रभूमि में ऑटो ब्रीडर सिस्टोमस सराना को स्टॉक करने की पहल की है।

यह मछली उत्पादन को बढ़ाने में मदद करेगा और मछुआरों द्वारा हर बार की गई स्टॉकिंग के लागत को भी कम करेगा, क्योंकि मछली की प्रजाति एक ऑटो ब्रीडर है और आर्द्रभूमि में ही प्रजनन कर सकती है। 17 जुलाई 2021 को बेलेडंगा आर्द्रभूमि, उत्तर २४ परगना, पश्चिम बंगाल की कैप्टिव नर्सरी में स्टॉक किए गए 8.02±0.98 ग्राम के औसत आकार के लगभग 10,000 *सिस्टोमस सराना* (सराना पुटी) अंगुलिकाएँ । इस प्रजाति को इसके कठोर परिस्थिति में भी जीवित रहने की क्षमता और ऑटो प्रजनन क्षमता को ध्यान में रखते हुए रखा जा रहा है। संपूर्ण स्टॉकिंग कार्यक्रम आर्द्रभूमि मत्स्य पालन समिति के सदस्यों की उपस्थिति में आयोजित किया गया था। मछुआरों को आर्द्रभूमि मत्स्य पालन में सराना मछली के महत्व के बारे में शिक्षित किया गया। सराना के अंगुलिकायों को कैप्टिव नर्सरी में 6 सप्ताह की अवधि के लिए थोड़े बड़े अंगुलिमीनों को प्राप्त करने के लिए स्टॉक किया जाता है और फिर आर्द्रभूमि में छोड़ दिया जाता है।

कार्यक्रम की परिकल्पना डॉ. बि. के. दास, संस्थान के निदेशक, द्वारा की गई थी और डॉ. पी. के. परिदा और श्री एच.एस. स्वैन द्वारा समन्वयित किया गया था। श्री के. मंडल, श्री पूर्ण चंद्र, वाईपी-II और संस्थान के अन्य अनुसूचित जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम के कर्मचारियों ने स्टॉकिंग कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- दो रामसर स्थलों वेम्बनाड झील और केरल की अष्टमुडी झील के मत्स्य समूहों का एमटीएल (औसत ट्रोफिक स्तर) के तुलनात्मक मूल्यांकन यह बताते हैं कि वर्ष 1993 में वेम्बनाड झील में परभक्षी प्रजातियों के आने से इसका औसत ट्रोफिक स्तर 3.36 हो गया था। वर्ष 2020 में सर्वाहारी प्रजातियों की बहुलता के कारण इसके औसत ट्रोफिक स्तर 0.44 दर्ज किया गया। अष्टमुडी झील में भी सर्वभक्षी प्रजातियों की प्रचूरता के कारण इसका औसत ट्रोफिक स्तर 0.4 हो गया है। अतः ट्रोफिक स्तर को बनाए रखने के लिए मत्स्य पकड़ और जाल आकार नियमन संबन्धित सख्त नीति निर्माण की आवश्यकता है।

- पश्चिम बंगाल के गंगा के निचले क्षेत्र में जलवायु परिवर्तनशीलता के संदर्भ में चार तटीय आर्द्रभूमि में एक विस्तृत सर्वेक्षण की भेद्यता का आकलन के लिए किया गया। हितधारकों के अनुसार, पिछले दो दशकों के दौरान मत्स्य विविधता 50-55 प्रजातियों से 30-35 प्रजातियों तक घट कर रह गई थी। इन प्रजातियों में लिजा परसिया, लिजा टाडे, मुगिल सेफालस, चानोस चानोस आदि के पकड़ में हाल के वर्षों में जलवायु और मानवजनित दबावों के कारण उल्लेखनीय कमी आई है। ।

- ओंकोरहिन्चस माइकिस (रेनबो ट्राउट) के टोंस नदी (यमुना नदी की एक सहायक नदी) में प्राकृतिक तौर पर वृद्धि और अभिगमन के अध्ययन से पता चला कि इस प्रजाति के परिपक्व मछलियों का वजन 81 दिनों में 76.5 ग्राम हो गया। इनके वजन में औसत जल तापमान 10.7 डिग्री सेन्टीग्रेड और हवा के तापमान 23.05 डिग्री सेन्टीग्रेड में प्रतिदिन 0.94 ग्राम के दर से वृद्धि हुई। इस प्रजाति को मोरी में प्रस्तावित बांध स्टाल पर छोड़ा गया था इसके बाद इसका अभिगमन इस स्थल से 7.5 किलोमीटर ऊपर देखा गया है।

- पश्चिम बंगाल के नदिया और उत्तर 24 परगना जिलों में बाढ़कृत मैदानी आर्द्रभूमि की कार्बन सिक्वेस्ट्रेशन क्षमता से यह पता चला है कि आर्द्रभूमि की मिट्टी में कार्बन घनत्व बहुत अधिक होता है और इसके ऊपरी क्षेत्र की तुलना में 3-4 गुना अधिक कार्बन होता है। ये आर्द्रभूमि कार्बन सिंक के रूप में कार्य करती हैं और वशविक तापमान वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद करते हैं।

बैठकें

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 23 जून, 2021 को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी पर एफएओ अध्ययन के संबंध में वर्चुअल बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 30 जून, 2021 को सीआईआई पशुधन कार्यबल (CII Livestock Taskforce) की बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 2 जुलाई, 2021 को सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 7 जुलाई 2021 को एनआईसी पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा आयोजित ईएसी-नदी घाटी और जलविद्युत परियोजनाओं की बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 8 जुलाई, 2021 को आईडीएफपीएल, कोलकाता के साथ पीपीपी प्रौद्योगिकी सहयोग पर एक आभासी बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 10 जुलाई, 2021 को विद्यासागर कॉलेज के प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार "एक्वाकल्चर की वर्तमान संभावना और रणनीतियाँ" में सम्मानीय अतिथि के रूप में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 10 जुलाई, 2021 को अखिल भारतीय कृषि छात्र संघ (एआईएएसए) द्वारा आयोजित मत्स्य कृषक दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और उद्घाटन भाषण दिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 16 जुलाई, 2021 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस और पुरस्कार समारोह 2021 में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 16 जुलाई, 2021 को सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित पद्म पुरस्कार विजेता किसानों के साथ संवादात्मक बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 20 जुलाई, 2021 को मत्स्य पालन विभाग, बिहार सरकार के निदेशक और वरिष्ठ अधिकारियों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मात्स्यिकी संभाग तथा परिषद के अधीनस्थ मात्स्यिकी संस्थानों के निदेशकों के साथ बैठक में भाग लिया।

प्रशिक्षण /जागरूकता कार्यशाला

- मछुआरों सहित स्थानीय लोगों को जागरूक करने के लिए बेनियाग्राम, फरक्का फीडर नहर और निमशहर, फरक्का में दिनांक 21 से 26 जून, 2021 तक 3 दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में 150 मछुआरों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

- संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 6 जुलाई 2021 को विभिन्न राज्यों के मत्स्य विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए "फिश कैच एस्टिमेशन" पर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण में मत्स्य पालन विभाग के 125 अधिकारियों ने भाग लिया।

- संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र ने दिनांक 10 जुलाई 2021 को 'भारत का अमृत महोत्सव' के अवसर पर भाकृअनुप-अटारी जोन-VI गुवाहाटी के सहयोग से "पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित प्रबंधन" पर एक ऑनलाइन पारस्परिक संवाद द्वारा क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में असम, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के 90 कृषि विज्ञान केंद्रों (KVK) से कुल 467 मछली किसानों और वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन कार्यक्रम में भाग लिया।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने दिनांक 10 जुलाई 2021 को मनचानाबेले जलाशय, रामनगर जिला, कर्नाटक में "सतत विकास के लिए जलाशय मत्स्य प्रबंधन" पर एक वेबिनार-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें प्रगतिशील मत्स्या उद्यमियों तथा राज्य और केंद्र सरकार मत्स्या विभागों से 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही, मैसूर और हेसरघट्टा के मत्स्य अधिकारी, वैज्ञानिक, छात्र, मछुआरे और मछली किसान ऑफलाइन और वर्चुअल मोड के माध्यम से कार्यक्रम में शामिल हुए।

- नदी में घटती हुई मछली स्टॉक के पुनरुद्धार और संरक्षण के साथ गंगा डॉल्फिन संरक्षण के संबंध में मछुआरों और स्थानीय लोगों को जागरूक करने के लिए दिनांक 10 जुलाई 2021 को बिचुली घाट, नबाबगंज और दशपारा घाट, बैरकपुर में कोविड 19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए तीन दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस जागरूकता अभियान के माध्यम से 150 से अधिक लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

- वझानी बांध हरिजन-गिरिजन मत्स्य सहकारी समिति (वज़ानी, त्रिशूर डीटी) के अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए संस्थान के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2021 को वज़ानी बांध में 'जलाशयों में आजीविका संवर्धन के लिए सतत मत्स्य पालन' पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस और 'भारत की अमृत महोत्सव' के अवसर पर इस कार्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- असम मत्स्य विकास निगम (एएफडीसी) लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से दिनांक 10 जुलाई 2021 को "असम के बील मछुआरों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र आधारित प्रबंधन" पर एक ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें असम के 20 जिलों में फैले 558 से अधिक बील पट्टेदारों, मछुआरों और मछुआरा सहकारी समितियों के सदस्यों ने 105 बील का प्रतिनिधित्व किया और असम मात्स्यिकी विकास निगम लिमिटेड (एएफडीसी) के फील्ड अधिकारियों ने ऑनलाइन कार्यक्रम में भाग लिया।

- मत्स्य कृषक दिवस के अवसर पर दिनांक 10 जुलाई 2021 को संगम नोज, प्रयागराज में पशुपालन-सह-जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रयागराज की महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नंदी थीं। इस कार्यक्रम में मछलियों को पुनर्स्थापित और संरक्षित करने के लिए गंगा नदी में घटते इंडियन मेजर कार्प (आईएमसी) की 3000 अग्रिम अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया गया। इस अवसर पर आसपास के गांवों के 50 से अधिक मछुआरे, मछली व्यापारी और गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लोग उपस्थित थे। साथ ही गंगा विचार मंच, मत्स्य विभाग और गंगा प्रहरी के मछली किसान अधिकारियों सहित 400 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

- संस्थान के वडोदरा अनुसंधान केंद्र द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2021 को सतत मत्स्य पालन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन वडोदरा में माही नदी तट पर किया गया था। इस कार्यक्रम में 50 मछुआरों ने भाग लिया।

अन्य

- 'राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस 2021' की पूर्व संध्या पर दिनांक 10 जुलाई, 2021 को बालागढ़, हुगली में भारतीय मेजर कार्प (*लेबियो रोहिता, लेबियो कतला, सिरहिनस मृगला*) का प्रजनन कार्यक्रम नमामि गंगे परियोजना के तहत गंगा नदी के स्वदेशी और मूल्यवास भारतीय मेजर कार्प प्रजातियों के पुनरुद्धार के लिए एक्स-सीटू संरक्षण के माध्यम से आयोजित किया गया था।

- फरक्का बैराज के बेनियाग्राम डाउनस्ट्रीम में कुल 937 हिल्सा मछलियों की राईचिंग की गई और 70 मछलियों को टैग किया गया।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों के समस्त चतुर्थ वर्ष का ग्यारहवा अंक (अगस्त:2021) प्रस्तुत कर, यह बताते हुए अत्यंत ही प्रसन्नता हो रही है कि हमारे संस्थान को पचहत्तरवें वर्ष में वृहत संस्थान श्रेणी के तहत सरदार पटेल उत्कृष्ट आईसीएआर संस्थान पुरस्कार-2020 से सम्मानित किया गया है। सरदार पटेल उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार के अलावा संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास, को पशु और मत्स्य विज्ञान श्रेणी के तहत कृषि विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए रफी अहमद किदवई पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। संस्थान पत्रिका "नीलांजलि" को 'ग' क्षेत्रों की श्रेणी में 'गणेश शंकर विद्यार्थी प्रोत्साहन पुरस्कार' मिला है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक धन्यवाद। आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा।

THE TIMES OF INDIA

CORPORATE BUZZ

ICAR-CIFRI bags Sardar Patel Outstanding ICAR Institution Award

ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Barrackpore, Kolkata has been awarded with prestigious Sardar Patel Outstanding ICAR Institution Award-2020 (under Large Institute Category) for 2020. The award was given by Narendra Singh Tomar, minister of Agriculture and Farmers Welfare, on the occasion of 93rd ICAR Foundation Day and Award Ceremony on July 16. The institute received ₹ 5 lakh cash award along with citation. Dr Basanta Kumar Das, director, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore, Kolkata has been awarded with prestigious Rafi Ahmed Kidwai Award

for Outstanding Research in Agricultural Sciences under Animal & Fisheries Sciences Category. The award carries cash reward of ₹ 2.5 lakh and citation. The award was given by Tomar. ICAR-CIFRI has accomplished significant scientific and technological progresses towards generating knowledge base for ensuring sustainability of inland open water ecology, aquatic biodiversity, fisheries, nutritional and livelihood securities.

DVC scheme for employees' families

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस पर सिफरी महापौर ने गंगा में छोड़ा मत्स्य बीज

इलाहाबाद एक्सप्रेस

[NATIONAL FISH FARMERS DAY]

3,000 fish of Indian major carp specie released into Ganga

HT Correspondent

PRAYAGRAJ : Indian Council of Agricultural Research-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Prayagraj, released 3,000 fishes of Indian

Fishes being released into the Ganga in Prayagraj on the occasion of National Fish Farmers Day on Saturday. HT

in the Ganga river to restore and conserve these fishes.

Dr DN Jha, scientist in-charge of the centre, welcomed the guests and informed people about the work done by ICAR-CIFRI to conserve rare fishes and biodiversity of the Ganga.

Programme was also addressed by special guest Rajesh Sharma, convener, Ganga Vichar Manch and representative of Namami Gange.

On this occasion, officials from Ganga Vichar Manch

জাতীয় মৎস্য দিবস পালিত

সিফরিতে জাতীয় মৎস্যপালন দিবস উদযাপন

নিজস্ব প্রতিনিধি, বারাকপুর: শনিবার বারাকপুরের সিফরিতে জাতীয় মৎস্যপালন দিবস উদযাপন করা হয়।

প্রযুক্তি লাইসেন্স স্থানান্তর চুক্তি হল

আর্গুলাস থেকে মাছকে রক্ষায় প্রতিষেধক আবিষ্কার সিফরির

নিজস্ব প্রতিনিধি, বারাকপুর: মাছ চাষে বড় সমস্যা হল পরজীবী পোকা আর্গুলাসের আক্রমণ। এর ফলে বহু মাছের মৃত্যু হয়। ক্ষতিগ্রস্ত হন মৎস্যচাষী। এই আর্গুলাস থেকে মাছকে রক্ষা করতে বারাকপুরের সিফরি (আইসিএআর-সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারি রিসার্চ ইনস্টিটিউট) একটি অভিনব 'প্রতিষেধক' আবিষ্কার করেছে। যার নাম দেওয়া হয়েছে— 'সিফরি আর্গুকিওর'। বুধবার সিফরি আর্গুকিওরের প্রযুক্তি

বাস্তুতন্ত্র-ভিত্তিক জলাভূমির ব্যবস্থাপনার মাধ্যমে গ্রামীণ জীবন-জীবিকার উন্নতি

city

Fish Farmers' Day observed by ICAR-CIFRI

STAFF REPORTER

GUWAHATI, July 10: The ICAR – Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Guwahati Regional Centre organized an online awareness programme on 'Ecosystem-based management for beel fishers of Assam' on Saturday.

He thanked all of them and also Dr B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI; Dr B. K. Bhattacharjya, Head, ICAR-CIFRI, Guwahati Regional Centre as well as all the Scientists/ technical and other staff members of the Centre.

Dr B. K. Bhattacharjya, Head, ICAR-CIFRI, Guwahati Regional Centre stated that the average fish production from the beels of Assam

सिफरि समाचार पत्रों एवं सन्चार माध्यम में

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल,

सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है